# नबी (स.) की ज़िन्दगी की झलकियाँ

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यद अली ख़ामेना–ई मद्दज़िल्लहूश्शरीफ

तमाम भाइयों और बहनों और अपने आप को अल्लाह के तक़्वे, चाल–ढाल, बातचीत में सच्ची नियत, सीधे रास्ते पर चलते रहने के लिए ख़ुदा से मदद माँगने की गुज़ारिश करता हूँ।

पैग़म्बरे अकरम (स.) अपने मानवी और नूरानी ख़ूबियों और बुलन्द व ऊँचे दर्जों जिनको समझने से भी हम मजबूर है इनके अलावा इन्सानी एतेबार से भी आप ग़ैर मामूली शख़्सियत वाले थे। आप लोगों ने हज़रत अली (अ.) के सिलसिले में बहुत कुछ सुना होगा आप (अ.) रसूल (स.) के शार्गिदों में से एक शार्गिद थे।

ख़ुदावन्दे आलम ने आपकी रूहानी और अख़लाक़ी शख़्सियत की इस तरह तरबियत की ताकि आप इस बड़ी अमानत के बोझ को आसानी के साथ संभाल सकें।

## बचपन

अगर आपके बचपन के दौर को देखा जाए तो एक रिवायत की बुनियाद पर आपके पिताश्री पैदाइश से पहले और दूसरी रिवायत से आपकी पैदाइश के कुछ महीनों बाद गुज़र गये। इस दौर के रस्म व रिवाज के मुताबिक़ शरीफ ख़ानदानों का यह चलन था कि अपने बच्चों को पाकदामन और साफ सुथरी औरतों के हवाले कर दिया करते थे, इसलिए आप (स.) को भी बनी साद के क़बीले की एक शरीफ औरत जनाब हलीमा सादिया के हवाले कर दिया गया। उन्होंने तक़रीबन छः साल तक आपकी परवरिश करने के बाद हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के हवाले कर दिया आप, रसूल (स.) को अपनी जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे। एक शेअ्र में हज़रत अब्दुल मुत्तलिब इस तरह फरमाते हैं कि मैं ख़ुदा के रसूल (स.) के लिए माँ की तरह हूँ। अब्दुल मुत्तलिब ने आपके लिये इस तरह मुहब्बत और मेहरबानी की कि ज़र्रा बराबर भी इसमें कमी का एहसास न होने दिया। यहाँ तक कि सब लोग इस मुहब्बत पर ताज्जुब करते थे। तारीख़ में मिलता है कि कभी–कभी जनाब अब्दुल मुत्तलिब के काबा के पास एक बिस्तर बिछा दिया जाता था और बनी हाशिम के जवान इसके आसपास बहुत ही इज़्ज़त व शराफत के साथ इकटठा होते थे लेकिन जनाब अब्दुल मुत्तलिब के न होने पर रसूल (स.) उस बिस्तर पर जलवा बिखेरते थे और जब जनाब अब्दुल मुत्तलिब आते थे तो बनी हाशिम के जवान कहते थे कि उठो यह अब्दुल मुत्तलिब की जगह है लेकिन जनाब अब्दुल मुत्तलिब फरमाते कि नहीं उनकी जगह भी यही है और फिर आपके क़रीब बैठ जाते थे। अभी आपकी उम्र आठ साल थी कि जनाब अब्दुल मुत्तलिब भी इस दुनिया से चल बसे। रिवायत के मुताबिक़ आपने इन्तेक़ाल से पहले अपने बेटे जनाब अबुतालिब से बैअत ली और बहुत ही ज़्यादा ताकीद के साथ बच्चे को आपके हवाले कर दिया और कहा जिस तरह मैंने इस बच्चे की हिफाज़त की है इसी तरह अब यह ज़िम्मेदारी तुम्हारी है। जनाब अबुतालिब ने भी ख़ुशी–ख़ुशी इस ज़िम्मेदारी को क़बूल किया। अपने घर लाये और फिर आपने और

आपकी बीवी जनाब फातिमा बिन्ते असद ने तक़रीबन 40 साल तक अपनी जान व माल, ग़रज़ हर तरह से आपकी मदद व हिफाज़त की।

## नबी (स०) का अख़लाक़

आपके अन्दर वह तमाम ख़ूबियाँ इकटठा थीं जो एक मुकम्मल इंसान के अन्दर मौजूद होनी चाहियें। अगर रसूल (स०) के अख़लाक़ को बयान करना चाहें तो आपके अख़लाक़ को दो हिस्सों में बाँट सकते हैंः ज़ाती अख़लाक़, हुकूमती अख़लाक़ (मामलों की तदबीर)

## ज़ाती अख़लाक़

आप (स०) अमानतदार, सच्चे, सब्र करने वाले, बहादुर और नर्म थे। हमेशा मज़लूमों को बचाते थे और आपकी चाल व किरदार की बुनियाद सच्चाई और सफाई पर थी, आप बदज़बान नहीं बल्कि अच्छा बोलने वाले थे। जज़ीर–ए–अरब के गिरे हुए अख़लाक़ के बावजूद आप उम्र के हर हिस्से में एक अमानतदार और किरदार वाले के नाम से जाने जाते थे और हर तरह की गन्दगी से पाक थे जो लोगों की ज़बान पर था।

कपड़े व जिस्म की पाकीज़गी, चाल ढाल की सच्चाई में अकेले थे। बहादुरी का यह हाल था कि दुश्मन के मुक़ाबले में कभी आपके क़दमों में कमज़ोरी नहीं देखी गई। आप साफ बोलने वाले थे यानी अपनी बात को सच्चाई और सफाई के साथ बयान करते थे। तक़वा व परहेज़गारी आपकी आदत थी।

मुख़्तसर यह कि आपकी 63 साल की ज़िन्दगी में इन ख़ूबियों और बड़ी सिफतों को अच्छी तरह देखा जा सकता है। मैं हज़रत (स०) की कुछ ख़ूबियों पर रौशनी डालना चाहता हूँः

## अमानतदारी

आपकी अमानतदारी का यह हाल था कि जाहिलियत के ज़माने में भी लोग आपको अमीन कह कर पुकारते थे। लोग अपनी क़ीमती चीज़ों को बहुत इत्मिनान के साथ आपकी ख़िदमत में लाकर रखते थे। यहाँ तक कि इस्लाम की दावत के बाद भी जबकि क़ुरैश की मुख़ालेफत ज़ोरों पर थी लोग अपनी अमानों को हुजूर की ख़िदमत में लाकर रखते थे और जैसा कि आप जानते हैं कि जब रसूले अकरम (स०) ने मक्का से मदीन हिजरत की तो लोगों की अमानतों को हज़रत अली (अ०) के हवाले कर दिया और ज़ोर दिया कि तुम कुछ दिन मक्के में रहो और लोगों की अमानतें वापस करके मेरे पास आना।

## नर्मी

आपकी नर्मी का यह हाल था कि जिन बातों को सुनकर आपके साथी या दूसरे लोग बेताब हो जाया करते थे आप उसका असर सामने नहीं लाते थे। कभी–कभी मक्के में आप (स०) के मुख़ालिफ लोग आपके साथ बहुत ही बेअदबी के साथ पेश आते थे चुनानचे एक बार जनाब अबुतालिब को मालूम हुआ तो वह बहुत नाराज़ हुए और गुस्से में अपनी तलवार को मियान से बाहर निकाल लिया और फिर जिसने जो ज़्यादती की थी उसके साथ वैसा ही सुलूक किया और कहा कि अगर किसी ने बोलने की हिम्मत की तो गर्दन उड़ा दूँगा।

जाहिलियत के ज़माने में ''हिल्फ़ुल फुज़ूल'' में भी आप (स०) शरीक थे। एक बार कोई मुसाफिर अपने सामान को बेचने के लिये मक्का में आया। आस इब्ने वाएल ने इससे माल लेकर रख लिया,

लेकिन क़ीमत देने से इन्कार कर दिया। वह बेचारा परदेसी मुसाफिर बहुत से लोगों के पास शिकायत लेकर गया लेकिन कोई कुछ न बिगाड़ सका। यहाँ तक कि अबु क़ुबैस पहाड़ पर गया और फरियाद करने लगा कि ऐ फहर की औलाद! मेरे ऊपर ज़ुल्म हुआ है। रसूल (स०) और आपके चचा ज़ुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब ने जब उसकी फरियाद सुनी तो उसके क़रीब आए उसने सारे हालात सुनाए। आप आस इब्ने वाएल के पास गये और फरमायाः उसकी क़ीमत क्यों नहीं देते। आस घर के अन्दर आया और फिर मजबूर होकर उसने उस माल की क़ीमत अदा कर दी। यह अहद व वादा इसी तरह बाक़ी रहा जो भी मक्का आता और उस पर ज़ुल्म होता तो आप उसका हक़ दिलवाते। इस्लाम की दावत के बरसों बाद भी हज़रत फरमाते थे कि मैं अब भी इस अहद व वादे पर बाक़ी हूँ।

## सफाई और पाकीज़गी

आप बचपन से ही पाक साफ रहते थे और अरब क़बीलों के बच्चों के उलट बहुत ही उसूल वाले थे। नौजवानी, जवानी आप हर ज़माने में अपना सर और चाल–ढाल संवार कर रखते थे और बालों में कंघा करते थे। जवानी का ज़माना गुज़रने के बाद जब कि आपकी उम्र 50 साल हो चुकी थी, तो सफाई का पूरा ख़याल रखते थे, ख़ुशबू लगाते थे। मैंने एक रिवायत में देखा है कि चूँकि उस वक़्त आईने का चलन नहीं था तो आप साफ पानी में देखकर अपनी पगड़ी और बालों को ठीक करते थे, इसके बाद साथियों और दोस्तों से मिलने के लिये बाहर जाते थे।

ज़ाहिदाना ज़िन्दगी के बाद भी सफर में ख़ुशबू और सुरमा साथ रखते थे और इसके पाबन्द थे। कई बार मिसवाक करते थे दूसरों को भी अपनी तरह से पाक व पाकीज़ा रहने पर ज़ोर देते थे। कुछ लोग इस ग़लतफहमी में फंसे हैं कि यह सब बेकार के ख़र्च के बिना मुमकिन नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि इन्सान पुराने और पेवन्द लगे कपड़ों के साथ भी ढंग और क़ाएदे से रह सकता है।

आप लोगों से ख़ुशहाली और ख़ुशी–ख़ुशी से मिलते थे अगरचे अकेले में सारे ग़म व अफसोस ज़ाहिर हो जाते थे लेकिन कभी आम लोगों में इसको ज़ाहिर नहीं किया।

## इबादत

रमज़ान के महीने के अलावा, रजब व शाबान और साल के बाक़ी दिनों में भी जब गर्मी सख़्ती इख़्तियार कर लेती थी, लू का ज़माना होता था तब भी आप (स०) रोज़ा रखते थे। आपके साथियों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल आपने तो कभी गुनाह ही नहीं किया। सूर–ए–फतह में यह आयत मौजूद है कि ''जब आप इतनी दुआ और इस्तेग़फार किस वजह से करते हैं?'' ख़ुदा के रसूल (स०) ने जवाब दिया ''क्या इतने इनामों के बाद में अल्लाह का शुक्र अदा करने वाला बन्दा न रहूँ''

## हुकूमती अख़लाक़ (मामलों की तदबीर)

अगर आप (स०) के हुकूमती अख़लाक़ को देखा जाए तो आप पहली सफ के इन्साफ करने वाले और मामला समझने वाले थे। वह क़बीलों की जंगें जो इन्सान की अक़्ल हैरान कर दें उन सबको रसूल (स०) ने अपनी समझदारी और हिक्मत से ख़त्म कर दिया।

**(बक़िया .............पेज 8 पर)**

शाम जाया करते थे। चूँकि शाम से तिजारती ताल्लुक़ात पर मक्का वालों की माली ख़ुशहाली का बहुत कुछ दारोमदार था इसलिए अल्लाह के रसूल (स॰) का मदीना को मरकज़ बना लेना उनके लिये बड़ा मसअला बन गया और उनके सामने इसका हल जंग के सिवा और कुछ न था लेकिन इस बड़े समझदार ने दुश्मन की फ़िक्र और एकजुटता की मज़बूती की बुनियादें पहले ही खोखली कर दी थीं और साथ ही मुसलमानों को अब पूरी तरह तैयार भी कर लिया था। जो आपस में भाईचारगी और इत्तेहाद व इत्तेफाक़ के बेपनाह शौक़ में डूबे हुए थे और जिसमें से हर एक रसूल (स॰) के मामूली इशारे पर अपना आख़री ख़ून का क़तरा तक बहा देने के लिये तैयार रहता था।

मुसलमानों की मिसाली एकजुटता और तैयारी के साथ आपने मदीने और आसपास के यहूदी क़बीलों को भी काफ़ी ढील देकर अपने साथ ले लिया या कम से कम उनकी मुख़ालेफत के ज़ोर को तोड़ दिया। मक्का से लेकर मदीने तक इस्लाम और मुसलमानों की तारीख़ का यह शुरुआती नक़शा नबी करीम (स॰) की पाक हस्ती का बनाया हुआ था जो वह्य व इल्हाम की रौशनी में आपकी बड़ी समझ का नतीजा था जिसका पहला असर यह हुआ कि 2 हिजरी में बद्र के मैदान में कुछ गिन्ती के निहत्थे मुसलमानों ने कुरैश की टिड्डी दल फौज को ठिकाने लगा दिया और इस बुरी तरह हराया जिसे तारीख़ कभी नहीं भुला सकती हालांकि इस जंग में मुसलमानों ने यहूदियों या किसी दूसरी क़ौम से किसी तरह की भी माली, फन्नी या किसी और तरह की कोई मदद नहीं ली थी बेशक रसूल (स॰) बहुत बड़ी समझ वाले थे और आपकी समझदारी इन्सानी नस्ल के लिए एक अलग तरह की मिसाल है। □□□

**(बक़िया.............नबी (स॰) की ज़िन्दगी की झलकियाँ)** आप ख़ुद भी क़ानून पर चलते थे और दूसरों को भी क़ानून तोड़ने की इजाज़त नहीं देते थे। कुर्आन गवाह है कि जिन उसूल व क़ानून पर सभी लोग चलते थे रसूल (स०) भी सख़्ती के साथ उसी क़ानून पर चलते थे।

जब बनी कुरैज़ा की जंग में मुसलमानों की जीत हुई और दुश्मनों को गिरफ्तार कर लिया गया उस वक़्त बहुत बड़ी तादाद में सोना, चाँदी और माल व दौलत मिला तो कुछ बीवियों ने इस बात की चाहत की कि अगर कुछ माल दे दें तो बेहतर होगा। रसूल (स०) ने मना कर दिया और नाराज़गी की वजह से एक महीने तक बीवियों से दूरी इख़्तियार कर ली। जिस पर सूरा 'अह्ज़ाब' की आयतें गवाह हैं।

जब आप ने मक्का को जीत लिया तो फिर किसी का डर नहीं था इसलिए आपने अबुसुफयान और इस जैसे बहुत से सरदारों के साथ भी अच्छा सुलूक किया। बहरहाल यह आप के हुकूमती अख़लाक़ के कुछ नुमाया पहलू थे कि जो जिस का हक़दार था उसके साथ वैसा ही सुलूक किया। दुश्मन की चालों के मुक़ाबले में होशियार, मोमिन के लिये झुकने वाले और अल्लाह के हुक्मों के सामने झुकने वाले, मुसलमानों के मामलों में बहुत कोशिश करने वाले थे।

ऐ ख़ुदा! हम तुझसे दुआ करते हैं कि हमको पैग़म्बर की उम्मत वाला बना दे हमें इस बड़ी मुहब्बत व उलफत के साथ दुनिया से उठा ले और क़यामत के दिन अपने नबी (स०) की ज़ियारत से हमको महरूम न करना। □□□